प्रोत्साहन राज्य स्तरीय माटीकला एवं ग्रामोद्योग पुरस्कार से कारीगरों को किया गया सम्मानित

माटीकला बोर्ड ने दिया 30888 लोगों को रोजगार

अमर उजाला ब्यूरो

लखनऊ। एमएसएमई, खादी एवं ग्रामोद्योग मंत्री राकेश सचान ने कहा कि माटीकला बोर्ड ने 30,888 लोगों को रोजगार दिया है। माटीकला से मुंह मोड़ती युवा पीढ़ी सरकारी प्रोत्साहन के जरिये वापस अपने पेशे में लौट रही है। अत्याधुनिक उपकरणों ने कारीगरों की आय कई गुना बढ़ा दी है। सचान शनिवार को गांधी भवन प्रेक्षागृह में राज्य स्तरीय माटीकला एवं ग्रामोद्योग पुरस्कार वितरण समारोह में बोल रहे थे।

समारोह में उत्कृष्ट शिल्पकारों और उद्यमियों को सम्मानित करते हुए माटीकला और ग्रामोद्योग के क्षेत्र में उनके योगदान को सराहा गया। सचान ने कहा कि सरकार की यह पहल न केवल कारीगरों को आर्थिक रूप से सशक्त बना रही है, बल्कि पर्यावरण संरक्षण और परंपरागत कला को संरक्षित करने में भी योगदान दे रही है। राकेश सचान ने पॉलीथीन के विकल्प के रूप में माटीकला उत्पादों जैसे कुल्हड़, गिलास, थाली और बोतल के उपयोग को प्रोत्साहित करने पर जोर दिया।

प्रमुख सचिव खादी एवं ग्रामोद्योग विभाग अनिल कुमार सागर ने कहा कि 2024-25 में

गांधी भवन प्रेक्षागृह में आयोजित समारोह में एमएसएमई मंत्री राकेश सचान ने कारीगरों से की मुलाकात। -विभाग

2,325 विद्युत चालित चाक, 375 पगमिल मशीनों का वितरण और 300 इकाइयों की स्थापना का लक्ष्य पूरा किया जा चुका है। साथ ही खादी बोर्ड ने 580 दोना-पत्तल मशीन और 756 पॉपकॉर्न मशीनें भी दी हैं।

मुख्य कार्यपालक अधिकारी डॉ. उज्ज्वल कुमार ने बताया कि अब तक 48,048 कारीगर परिवारों का चिह्नाकन किया गया है, जिसमें से 32,593 को मिट्टी खोदने के पट्टे, 15,832 विद्युत चालित चाक, 81 दीया मेकिंग मशीन और 31 पेंटिंग मशीनें वितरित की जा चुकी हैं। इसके अलावा, 19,650 लाभार्थियों को प्रशिक्षण और 122 सहकारी समितियों की स्थापना भी की गई है।

इन्हें मिला पुरस्कार

कार्यक्रम में राज्य स्तरीय माटीकला और ग्रामोद्योग पुरस्कार में माटीकला श्रेणी में आजमगढ़ के आनंद कुमार प्रजापति को प्रथम पुरस्कार (40,000 रुपये), अयोध्या के राम सजीवन प्रजापति को द्वितीय पुरस्कार (30,000 रुपये) और कानपुर देहात के विपिन कुमार को तृतीय पुरस्कार (20,000 रुपये) से सम्मानित किया गया। वहीं, ग्रामोद्योग श्रेणी में मेरठ की मुनेश को प्रथम, बांदा के अर्जुन को द्वितीय और वाराणसी के अशोक कुमार जायसवाल को तृतीय पुरस्कार मिला।